AYJNISHD(D)

अंतर्राष्ट्रीय दिव्यांगजन दिवस संदेश 2025

डॉ. सुमन कुमार, निदेशक
अ.या.जं.रा.वा.श्र.दि.सं., मुंबई

प्रिय साथियों, विद्यार्थियों एवं मित्रों,

3 दिसंबर – अंतर्राष्ट्रीय दिव्यांगजन दिवस (International Day for PwDs) हमारे लिए केवल एक औपचारिक दिवस नहीं है, बल्कि यह एक अवसर है आत्मचिंतन का, यह समझने का कि एक समावेशी, समान एवं सहानुभूतिपूर्ण भारत का निर्माण हम सभी की सामूहिक जिम्मेदारी है। यह दिन हमें स्मरण कराता है कि दिव्यांगजन समाज के उपेक्षित समूह नहीं, बल्कि राष्ट्र की प्रगति में सक्रिय योगदान देने वाले सशक्त नागरिक हैं।

इस वर्ष की थीम — **"Fostering disability-inclusive societies for advancing social progress"** — अर्थात् ऐसे समाजों का निर्माण करना जो दिव्यांगजनों को समान रूप से जोड़ें, जिससे सामाजिक प्रगति संभव हो सके, जो कि हमें प्रेरित करता है कि हम सहयोग, अवसर और समानता पर आधारित समाज का निर्माण करें।

यह थीम हमें यह समझाती है कि दिव्यांगता कोई सीमा नहीं, बल्कि मानव विविधता और क्षमता का एक स्वरूप है। जब समाज समावेशी और संवेदनशील होता है, तब प्रगति केवल संख्याओं में नहीं, बल्कि मानवीय मूल्यों में भी दिखाई देती है। **अली यावर जंग राष्ट्रीय वाक् एवं श्रवण दिव्यांगजन संस्थान, मुंबई** पिछले 42 वर्षों से इसी दृष्टि और सोच को मजबूत आधार प्रदान करता आ रहा है। 1983 में स्थापना के बाद से संस्थान ने वाक् एवं श्रवण दिव्यांगजनों के पुनर्वास, शिक्षा, तकनीकी विकास, अनुसंधान और क्षमता-निर्माण में अग्रणी भूमिका निभाई है।

संस्थान की प्रमुख उपलब्धियां एवं योगदान:

- **विशेषीकृत शिक्षा एवं प्रशिक्षण:** वाक्-भाषा विकृति विज्ञान, श्रवण विज्ञान, विशेष शिक्षा और पुनर्वास के उच्च स्तरीय पाठ्यक्रमों के माध्यम से हमने हजारों पेशेवर तैयार किए, जो पूरे देश में पुनर्वास सेवाएं प्रदान कर रहे हैं।
- **उच्चस्तरीय नैदानिक सेवाएं:** श्रवण परीक्षण, श्रवण यंत्र फिटिंग, कॉक्लिअर इम्प्लांट, भाषा-विकास थेरेपी और परामर्श सेवाओं के माध्यम से लाखों लाभार्थियों को नई जीवन दिशा मिली है।
- **समावेशन आधारित पहल:** समुदाय-जागरूकता, सरकारी-समन्वय, जन-शिक्षा कार्यक्रमों तथा विशेष अभियानों के माध्यम से समाज में दिव्यांगजन अधिकार, सम्मान और समान भागीदारी की भावना को मजबूती मिली है।
- **गरिमा एवं आत्मनिर्भरता का संवर्धन:** संस्थान का उद्देश्य केवल सहायता देना नहीं, बल्कि स्वाभिमान, आत्मविश्वास और स्वतंत्रता की पुनर्स्थापना है — ताकि दिव्यांगजन समाज के सक्रिय, सक्षम और सम्मानित नागरिक बन सकें।

प्रिय साथियों, आज हम सब यह संकल्प लें— दिव्यांगता को कमजोरी नहीं, क्षमता एवं विविधता का एक रूप मानें। हर बाधा को अवसर में बदलने के लिए कार्य करें। तकनीकी, भौतिक, शैक्षणिक और सामाजिक—हर क्षेत्र में पहुंच और समानता सुनिश्चित करें।

जब समाज के प्रत्येक व्यक्ति को सम्मान और समान अवसर मिलेगा, तभी सच्ची प्रगति संभव होगी। आइए, इस अंतर्राष्ट्रीय दिव्यांगजन दिवस को केवल आयोजन का दिन नहीं, बल्कि एक संवेदनशील, समावेशी और मानव-केंद्रित समाज के निर्माण की नई शुरुआत बनाएं।

।। जय हिंद ।।

आपका शुभेच्छु,
एसडी/-
निदेशक